छैल, कुंज को देखता रहा। उसका चेहरा परेशान बल्कि बदहवास था। जैसे यह परिवार घेर कर उसे घाटी में फेंकेगा और बुलेरो लेकर फरार हो जायेगा। यदि ऐसा होता है तो पूरी ताकत लगा कर भी वह तीन बलिष्ठ पुरुषों की पकड़ से खुद को छुड़ा नहीं पायेगा। शर्मा जी नहीं जाने क्यों पूछ रहे हैं लेकिन पूछा -

''परेशान लग रहे हो।''

''हमारा मालिक का गाड़ी चोरी हो गया।''

''कैसे?''

''एक पार्टी मणिपुर के लिये गाड़ी बुक किया था। ड्राइवर को मार कर रास्ते में फेंक दिया और गाड़ी ले गया।''

''किसने बताया ?''

''अभी मालिक का मेरे मोबाइल पर कॉल था।''

शर्मा जी की नसों का तनाव कम हुआ। ''गाड़ी कौन बुक कर रहा है, कैसे लोग हैं, मालूम होना चाहिये।''

''हमारा औकात क्या है जो हम टूरिस्ट से कहें अपना आईडी प्रूफ दिखाओ। आपसे कहता तो आप बुरा मानता न। मालिक जहां कहें, हमको जाना पड़ता है।''

''ओह .....।''

''आप लोगों को तवांग बौद्ध मठ और वार मेमोरियल दिखा दूं। बैठिये।''

वातावरण नकारात्मक हो गया।

चुस्ती-फुर्ती, बुलंदी, गौरव खोकर शिथिल हुआ लुम्मेर ऐसा मौन हो गया जैसे दुर्गम पथ पर वाहन चलाना वीरता का काम बिल्कुल नहीं है। उसे शिद्दत से लगने लगा दुर्गम पथ पर ऊर्जा खोते हुए शक्तिहीन होता जा रहा है। नींद पूरी नहीं होती है। वाहन चलाते हुए एक झपकी आ जाये कि घाटी में समाधि बन जाये। पद्मावती और बच्चियों को कभी इस तरह उसके मरने की खबर मिले तो उनकी क्या दशा होगी?

तवांग मठ, वार मेमोरियल, बाजार आदि देखने के उपरांत शर्मा जी लुम्मेर से बोले ''कल बूमला (चाइना बार्डर) देखेंगे।''

लुम्मेर अन्यमनस्क बना रहा ''मालिक परेसान है। जल्दी लौटने को बोला है।''

''बुकिंग के समय मालिक को बताया था बूमला जायेंगे।''

''सरकारी ऑफिस जाना पड़ेगा। बूमला के लिये परमीसन लेना पड़ता है।''

लुम्मेर ने कोई तर्क नहीं किया। जानता था, शनिवार होने से कार्यालय आज आधा दिन ही खुला रहा होगा। कल रविवार की छुट्टी। सोमवार को वापसी है। शाम साढ़े चार बजे शर्मा परिवार को लेकर कार्यालय पहुंचा। कार्यालय बंद मिला। मराल ने उदास होकर सीधे लुम्मेर से पूछा -

''हम बूमला नहीं देख सकेंगे?''

''नहीं।''

लुम्मेर ने दिलचस्पी नहीं दिखाई। लड़कियों को प्रभावित करने का जज्बा खत्म। ये लड़कियां एक अच्छा सपना हैं, बस।

वापसी।

लुम्मेर अप्रतयाशित रूप से चुप है। इतना चुप है कि सबको लगने लगा यह इतना न बोलता तो दुर्गम पथ की अड़चनें अधिक महसूस होतीं। बहुत बोल कर वस्तुतः यह माहौल बना दिया करता है। प्रेरित करने पर भी लुम्मेर चुप रहा। जितनी जल्दी हो सके वह तेजपुर पहुंचना चाहता था।

तेजपुर प्रायः पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर था। पीछे से तेज गति से आ रही टाटा सूमो ने ओवर टेक कर लुम्मेर को रोक लिया। सूमो में सामने की सीट पर बैठे यातायात पुलिस के सिपाही को देख लुम्मेर का चेहरा एक बार फिर बदहवास हो गया। सिपाही ने सूमो से उतर कर लुम्मेर से क्षेत्रीय बोली में क्या पूछा, लुम्मेर ने क्या जवाब दिया, शर्मा परिवार नहीं समझ सका। अब सिपाही ने सीधे शर्मा जी से पूछा -

''कहां जा रहे हैं?''

''तेजपुर।''

''गाड़ी आपकी है ?''

''टैक्सी।''

''नम्बर प्लेट का रंग टैक्सी का नहीं है। ड्राइवर तुम गाड़ी के पेपर्स और अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाओ।''

''हम तो ड्राइवर हैं मालिक।'' कहते हुए लुम्मेर ने कागजात और लाइसेंस दिखाया।

सिपाही भड़क गया ''प्राइवेट गाड़ी को टैक्सी में चलाते हो?''

''हमारा मालिक .....

''मालिक को मैं देख लूंगा।'' कहते हुए लुम्मेर को उपेक्षित कर सिपाही, शर्मा जी की ओर मुड़ा ''हम यह गाड़ी रिक्वीजीशन में ले रहे हैं। आपको तकलीफ होगा लेकिन जंगल में सर्चिंग के लिये हमको ऐसा करना पड़ता है। उग्रवादी सरकारी गाड़ी को पहचान लेते हैं और एलर्ट हो जाते हैं। आप लोग सूमो में आ जायें। ड्राइवर तेजपुर पहुंचा देगा।''

वरदी पहने हुये, सूमो में बैठे फौजी सिपाही, शर्मा परिवार को अपहरणकर्ता लग रहे थे। अगवा कर पूरे परिवार को कहां ले जायेंगे ?

शर्मा जी विनम्र हुए-

''हम तेजपुर पहुंच जायें फिर आप यह गाड़ी लें।''

सिपाही ने आग्रह स्वीकार न किया ''मेरा सेल नम्बर नोट करें। कोई दिक्कत हो तो मुझे कॉल कीजिये। मजबूरी में हमको यह सब करना पड़ता है।''

सूमो का चालक, शर्मा जी का सामान सूमो में रखने लगा। फौजी अपना सामान बुलेरो में ले गये। बदहवास लुम्मेर ने मोबाइल पर मालिक से बात की। पद्मावती से बात की। फिर सिपाही के आगे हाथ जोड़े -

''हमको भूख लगा है। दो रात से सोया नहीं। थका है साहब।''

सिपाही ने लुम्मेर को बिल्कुल महत्व नहीं दिया।

सूमो, शर्मा परिवार को लेकर तेजपुर की ओर चल दी। राजसी ने पीछे मुड़कर लुम्मेर को देखा ''बेचारा थका होगा। इतनी अच्छी गाड़ी चलाता है। कहीं नहीं लगा संतुलन खो रहा है ..... सोचती थी घर पहुंच कर हजार रुपये दे दूंगी पर .....।''

उधर लुम्मेर के जेहन में न मराल थी, न मृणाल। पद्मावती थी, बच्चियां थी। भूख थी, नींद थी, थकान थी, जोखिम था, अनिश्चय था। वही पथ था जिस पथ से ठीक अभी आया था। ■